ऋग्वेद संहिता

(सरल हिन्दी भावार्थ सहित)

भाग-४

(मण्डल ९-१०)

सम्पादक

वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

Scanned with CamScanner

वाले सप्तहोता (सप्त वर्णयुक्त) अर्यमा (प्रकाश कण-फोटांस या सूर्य) अविचलित मार्ग से चलने वाले सुख-साधनों से युक्त रथ से सम्पन्न होते हैं ॥५ ॥

[अधिकांश आचार्य अदिति का अर्थ पृथ्वी एवं दक्ष का सूर्य अर्थ करते हैं। सूर्य के सृजन में पृथ्वी का योग युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता। फिर मंत्र में क्रिया रूप में 'करती हो' सतत चलने वाली प्रक्रिया का द्योतक है। अदिति उत्पादक आदि ऊर्जा, दक्ष पदार्थ निर्माण में कुशल आद्य शक्ति प्रवाह के रूप में मान्य हैं। मित्र एवं वरुण, ऋण एवं धन प्रभारयुक्त उपकण (सब पार्टिकल्स) हैं। उनके संयोग से निर्मित फोटांस प्रकाशकण अर्यमा हैं। वे सप्तवर्ण वाले विविध रूपों में सीधे मार्ग से चलने वाले हैं। निरुक्त में अर्यमा को सूर्य कहा है। सूर्य प्रकाश कणों का जन्मदाता है। यह प्रक्रिया प्रकृति में सतत चल रही है।]

९४६६. ते नो अर्वन्तो हवनश्रुतो हवं विश्वे शृण्वन्तु वाजिनो मितद्रवः ।
सहस्रसा मेधसाताविव त्मना महो ये धनं समिथेषु जभ्रिरे ॥६ ॥

इन्द्रदेव के जो अश्व संग्राम काल में शत्रुओं के विशाल धन को स्वयमेव वहन करते हैं, जो यज्ञ काल में सदैव सहस्रों ऐश्वर्य प्रदान करते हैं और जो कुशल अश्वों के समान शीघ्र गति से पद-निक्षेप करते हैं, वे सभी हमारे आवाहन को सुनें। हमारे आमन्त्रण को वे कभी अस्वीकार नहीं करेंगे ॥६ ॥

[विविध देवताओं के शक्ति- प्रवाहों को 'अश्व' संबोधन दिया गया है। उन चेतना युक्त शक्ति- प्रवाहों से सदुद्देश्य के लिए सहयोग करने की प्रार्थना की गयी है।]

९४६७. प्र वो वायुं रथयुजं पुरन्धिं स्तोमैः कृणुध्वं सख्याय पूषणम् ।
ते हि देवस्य सवितुः सवीमनि क्रतुं सचन्ते सचितः सचेतसः ॥७ ॥

हे स्तोतागण ! आप रथयोजक वायु , विपुल कर्मकर्त्ता इन्द्रदेव और पूषादेव की श्रेष्ठ स्तुति करके अपनी मैत्री के लिए उन्हें आमन्त्रित करो। वे सभी समान मनों से युक्त होकर सर्वप्रेरक सवितादेव के यज्ञ में, प्रभातवेला में आकर विराजमान होते हैं ॥७ ॥

९४६८. त्रिः सप्त सस्रा नद्यो महीरपो वनस्पतीन्पर्वताँ अग्निमूतये ।
कृशानुमस्तृन्त्सिष्यं सधस्थ आ रुद्रं रुद्रेषु रुद्रियं हवामहे ॥८ ॥

तीन (द्यु, अन्तरिक्ष एवं भूलोक में) और सतत संचरित सात प्रवाह (अथवा २१ नदियाँ), सतत संचरित सात महासागर, वनस्पतियों, पर्वतों, अग्नि, कृशानु नामक सोमपालक गन्धर्व, वाण चालक अनुचर गन्धर्वों, पुष्य नक्षत्र, हविर्भाग योग्य रुद्र, रुद्रगणों में श्रेष्ठ रुद्र को हम यज्ञीय संरक्षण के लिए आवाहित करते हैं ॥८ ॥

[प्रकृति में चलने वाले पोषक यज्ञीय प्रवाह के सहयोग में उसमें कार्यरत विविध दिव्य प्रवाहों को आवाहित किया जा रहा है। मंत्र का भाव देखते हुए 'त्रिसप्त सस्रा नद्यः' का अर्थ केवल नदियों तक सीमित किया जाना समीचीन नहीं लगता।]

९४६९. सरस्वती सरयुः सिन्धुरूर्मिभिर्महो महीरवसा यन्तु वक्षणीः ।
देवीरापो मातरः सूदयित्नवो घृतवत्पयो मधुमन्नो अर्चत ॥९ ॥

महती, पूजनीय और तरंगशालिनी त्रिसप्त धाराएँ हमारे संरक्षण के लिए आगमन करें। मातृ सदृश और जल प्रेरक ये सभी देवियाँ घृतवत् पुष्टिप्रद और मधु के समान पय (दूध या पोषक प्रवाह) हमें प्रदान करें ॥९ ॥

९४७०. उत माता बृहद्दिवा शृणोतु नस्त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः पिता वचः ।
ऋभुक्षा वाजो रथस्पतिर्भगो रण्वः शंसः शशमानस्य पातु नः ॥१० ॥

तेजस्विनी देवमाता हमारे निवेदन को सुनें, देवपिता त्वष्टा अपने पुत्र देवों- देवपत्नियों के साथ हमारे वचनों के अभिप्राय को समझें। इन्द्र, वाज, रथपति भग एवं स्तुत्य मरुद्गण हम स्तोताओं का संरक्षण करें ॥१० ॥

Scanned with CamScanner

९५९६. इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या ।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया ॥५ ॥

हे गंगा, यमुना, सरस्वती, शुतुद्री (सतलज) , परुष्णी (रावी) , असिक्नी (चिनाव) के साथ मरुद्वृधा (चिनाव और झेलम के मध्य में अथवा चिनाव की पश्चिम दिशा वाली मरुवर्दवन नामक सहायक नदी) ; वितस्ता (झेलम) , सुषोमा (सोहान) और आर्जीकीया (व्यास) आदि नदियो ! आप सभी हमारे इन स्तोत्रों को सुनें ॥५ ॥

९५९७. तृष्टामया प्रथमं यातवे सजूः सुसर्त्वा रसया श्वेत्या त्या ।
त्वं सिन्धो कुभया गोमतीं क्रुमुं मेहत्न्वा सरथं याभिरीयसे ॥६ ॥

हे सिन्धु महानदी ! आप पहले तुष्टामा (सिन्धु की सहायक नदी) के साथ प्रवाहित हुईं । पुनः सुसर्त्तु , रसा और श्वेत्या (ये तीनों सिन्धु की पश्चिमी सहायक नदियाँ हैं) से सम्मिलित हुईं । आप क्रमु (कुर्रम) , गोमती को कुभा (काबुल नदी) और मेहत्नु (सिन्धु की पश्चिमी सहायक नदी) को अपने साथ सम्मिलित करती हैं । इन सभी नदियों के साथ एक ही रथ पर सवार होकर चलती हैं ॥६ ॥

९५९८. ऋजीत्येनी रुशती महित्वा परि ज्रयांसि भरते रजांसि ।
अदब्धा सिन्धुरपसामपस्तमाश्वा न चित्रा वपुषीव दर्शता ॥७ ॥

सिन्धु महानदी सरलगामिनी, श्वेतवर्णा और प्रदीप्तमती हैं, जो अति तीव्रगति से जल के साथ प्रवाहित होती हैं । अगाध महानदी सिन्धु , नदियों में सबसे वेगवती हैं । यह अद्भुत वेगशील घोड़ी के सदृश हैं तथा सुन्दर स्त्री के समान देखने में सुन्दर हैं ॥७ ॥

९५९९. स्वश्वा सिन्धुः सुरथा सुवासा हिरण्ययी सुकृता वाजिनीवती ।
ऊर्णावती युवतिः सीलमावत्युताधि वस्ते सुभगा मधुवृधम् ॥८ ॥

सिन्धु महानदी श्रेष्ठ अश्वों, उत्तम रथ, सुन्दर वस्त्र (परिधान) , सुवर्णमय आभूषण, पुण्यवती, अन्नवती तथा पशुलोमवाली है । सिन्धु नित्य तरुणी और अनेक तन्तुओं वाली है । वह श्रेष्ठ ऐश्वर्यशालिनी (सौभाग्यवती) सिन्धु मधुवर्धक पुष्पों से आच्छादित है ॥८ ॥

९६००. सुखं रथं युयुजे सिन्धुरश्विनं तेन वाजं सनिषदस्मिन्नाजौ ।
महान्ह्यस्य महिमा पनस्यतेऽदब्धस्य स्वयशसो विरप्शिनः ॥९ ॥

सिन्धु महानदी सुखद और अश्वयुक्त रथ को जोतती हैं । उस रथ से वे हमें अन्नादि प्रदान करें । इस यज्ञ में सिन्धु के रथ की महान् महिमा का गान किया गया है । सिन्धु का रथ हिंसारहित, यशस्वी और महानता युक्त है ॥

[सूक्त - ७६]

[**ऋषि** - जरत्कर्ण ऐरावत (सर्प) । **देवता** - ग्रावा (प्रस्तरखण्ड) । **छन्द** - जगती ।]

इस सूक्त के देवता का नाम 'ग्रावा' है । ग्रावा सोम निचोड़ने में प्रयुक्त पाषाण-उपकरण को भी कहते हैं । सोमयज्ञ में उसका उल्लेख होने से ग्रावा का यही अर्थ अधिकांश आचार्यों ने लिया है, किन्तु ग्रावा के अर्थ 'पर्वत' और 'मेघ' भी हैं । ग्रावा सम्बोधन तीन प्रयोजनों से दिया जाता है, कूटने (दबाव देने) के कारण, शब्द करने तथा ग्रहण करने के कारण । सोमयज्ञ में सोमलता से सोम निचोड़ने के क्रम में ऋषि दिव्य दृष्टि से देखते हैं कि यह सोम अभिषवण की प्रक्रिया प्रकृति में भी चल रही है । उसकी अनुभूति मंत्रों में व्यक्त हुई । इसलिए ग्रावा का अर्थ इन्हीं व्यापक सन्दर्भों में लिया जाना उचित है । मंत्रार्थ में इस बात को ध्यान में रखा गया है । सुधी अध्येता भी यह दृष्टि रखेंगे, तो अधिक लाभ पा सकेंगे --

Scanned with CamScanner